धारावाहिक संख्या - 19

"लापता रोबोट"

स्क्रिप्ट - Dr Manas Pratim Das
हिंदी अनुवाद - Shriniwas Oli
अवधारणा और समन्यवय : Dr. B. K. Tyagi

पात्र परिचय -

अफरीना, ललित, रमन, शरत और नेहा - (19-21 वर्ष के छात्र)

रूपक - (रोबोट)

सिस्टर - (नर्स)

हॉस्पीटल सुपरिटेंडेंट - 58 वर्ष

----------Opening Music / Scene One----------

(चार दोस्त एक वीरान से गोदाम में बैठकर किसी बात को लेकर चिंतित हैं। ये चारों दोस्त इंजीनियरिंग के छात्र हैं और तीसरे साल की पढ़ाई कर रहे हैं।)

अफरीना : मुझे तो पता था कि ऐसा ही होगा। मैंने तुम लोगों को पहले भी बताया लेकिन मेरी बातों पर ध्यान देने की जरूरत तो किसी ने समझी ही नहीं। जब हम लोग फर्स्ट इयर में थे, तभी से हम लोग लगातार इस वीरान गोदाम में मिल रहे हैं। पिछले तीन सालों में ऐसी मुश्किल तो कभी नहीं आई।

ललित : ये तो बड़ी मुसीबत हो गई हमारे लिए...। लेकिन अब क्या किया जाय ?

रमन : शांत रहो दोस्तो। घबराने से तो हमें कोई रास्ता नहीं मिलेगा।

शरत : हां, बिल्कुल। घबराने से कोई फायदा नहीं, परेशान मत होओ... कुछ ना कुछ रास्ता तो निकालना ही होगा। दोस्तो... जरा मैं अभी आता हूं...दो मिनट में।

ललित : **(नाराजगी भरा स्वर)** शरत, तुम्हें आखिर दिक्कत क्या है? तुम बार-बार बीच से उठकर क्यों चले जाते हो? तुम आधे घंटे में तीन बार टॉयलेट जा चुके हो। (व्यंग्य भरे अंदाज में) रमन, देखो जरा इस बहादुर को ! क्या ऐसे साथियों के दम पर ही तुम मजबूत टीम का ख्वाब देख रहे हो?

शरत : थौड़ा कम बोलो ललित। मैं जानता हूं कि यहां अभी हर कोई डरा हुआ है। मैं अभी आता हूं... बस एक मिनट में।

रमन : ठीक है शरत, जाओ ! लेकिन फिर बार-बार नहीं जाओगे। जल्दी वापस आओ और इस मुश्किल का हल खोजने में अपना दिमाग लगाओ। मुझे यकीन है कि अगर हम सभी साथ मिलकर काम करें तो इस परेशानी से बाहर निकल ही जाएंगे।

अफरीना : गलती भी तो हमारी ही है, वो भी इतनी बड़ी गलती। आखिर जल्दीबाजी की जरूरत क्या थी? हम एक-दो महीने का इंतजार भी कर सकते थे!

रमन : हां, सही बात है। ***(पछतावा भरा अंदाज)*** वैसे, मशीन को बाहर गली में जाने को लेकर मैंने ही ज्यादा जोर डाला था। अफरीना ने तो तब भी मना ही किया था। ललित और शरत भी डरे हुए थे। सिर्फ मैंने ही इस फैसले को सही ठहराया था। तब मेरा ही मानना था कि मशीन को खुद फैसले लेने का मौका देना ही चाहिए। इससे उसका टेस्ट भी हो जाता। लेकिन....।

अफरीना : ***(सांत्वना भरा स्वर)*** ऐसे मायूस मत होओ रमन। हम सारा इल्जाम तुम पर नहीं लगा रहे हैं। हमें तो फिक्र ये है कि अब यूनिवर्सिटी एडमिनिस्ट्रेशन (विश्वविद्यालय प्रशासन) का रवैया क्या होगा?

ललित : ये सब तो बाद में देखा जा सकता है... मेरा मतलब है वो सब हम संभाल लेंगे। लेकिन मुझे तो दूसरी ही फिक्र सता रही है।

रमन : दूसरी मतलब ? कहना क्या चाहते हो तुम ?

ललित : मेरा मतलब है पुलिसवाले...! जब वो लोग इंसान की तरह दिखने वाले किसी रोबोट को गलियों में घूमता-फिरता देखेंगे तो....।

अफरीना : **(भयभीत स्वर)** मुझे तो इस बारे में सोचने से ही डर लग रहा है। पुलिसवाले तो यही सोचेंगे कि इस मशीन का संबंध किसी आतंकी संगठन से होगा। शायद उन्हें लगे कि आतंकियों ने खुद संचालित होने वाला कोई आत्मघाती हमलावर भेज दिया है।

(शरत टॉयलेट से लौटता है। इन चारों छात्रों में से वही सबसे ज्यादा डरा हुआ है। अपनी घबराहट को जताने के लिए वो कुछ अजीब सी आवाज़ निकालता है।)

रमन : बैठो शरत... बैठो। जरा मुझे ये बताओ कि मशीन अपने रास्ते से कब भटकी ? मेरे ख्याल से तुम्हारा रिमोट तो सही काम कर रहा है।

ललित : मैं बताता हूं। हम लोग नई अपार्टमेंट बिल्डिंग में बैठे हुए थे। अभी वो बिल्डिंग खाली ही है इसलिए हमें वहां प्रयोग करने में कोई दिक्कत भी नहीं थी।

अफरीना : ये तो हमें मालूम ही है। बस ये बताओ कि गलती क्या हुई ?

शरत : ***(रुक-रुक कर / घबराते हुए)*** रिमोट हमारे हाथ में था, लेकिन हम लोग उसका इस्तेमाल नहीं कर रहे थे। हम ये देखना चाह रहे थे कि मशीन खुद क्या करती है ? यानी कैसे मूवमेंट करती है ?

अफरीना : फिर क्या हुआ ?

ललित : फिर वो रोबोट उत्तर की दिशा में चलता गया... सीधे-सीधे... बड़े मैदान के उस पार। दोपहर का वक्त था और उस दौरान वहां कोई भी मौजूद नहीं था। वहां से होते हुए वो रोबोट हाईवे की ओर चल दिया।

रमन : लेकिन उसे तो हाईवे पर नहीं जाना चाहिए था...क्यों ?

ललित : हां, बिल्कुल ! उस मशीन को एक थके हुए इंसान की तरह दिखने और काम करने के लिए प्रोग्राम किया गया था.... जो मैदान के किनारे बेंच पर बैठ जाए और अपना माथा ऐसे पोंछे जैसे वो अपना पसीना पोंछ रहा हो।

शरत : ... और इसके बाद वो प्वाइंट ज़ीरो पर लौट आता। ठीक वहीं पर, जहां से उसने चलना शुरू किया था। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

अफरीना : तो फिर गलती कहां पर हुई ?

ललित : यही तो पता नहीं चल रहा है। वो बैंच पर बैठा तो सही, लेकिन जल्दी ही खड़ा हुआ और हाईवे की ओर चलने लगा।

रमन : तो उस वक्त तुमने रिमोट का इस्तेमाल क्यों नहीं किया ? उसे उसी वक्त रोका जा सकता था। तब तुम दोनों उस मशीन को वापस ले आते। (नाराजगी भरे स्वर में) कितनी बड़ी बेवकूफी कर दी तुमने। अफरीना और मुझे क्लास में नहीं जाना चाहिए था। इस रोबोट को तैयार करने के लिए ही तो हमने कितनी सारी क्लासेज बंक की थीं और एक्ज़ाम में इतनी कम परसेंटेज आई। सब कुछ इसके खातिर किया और आखिर में.... सब गुड़-गोबर कर दिया तुमने।

शरत : हमारी बात सुनो रमन। नाराज़ मत होओ। उस समय जो भी हो सकता था, हमने वो सबकुछ किया। लेकिन पता नहीं क्यों, रिमोट भी तब काम नहीं कर रहा था।

ललित : हां, हम हाथ पर हाथ धरे थौड़ी बैठे थे। जब रिमोट ने काम नहीं किया तो हमलोग दौड़कर उस जगह पहुंचे लेकिन....।

अफरीना : लेकिन क्या ? वो मशीन यूं ही छूमंतर हो गई क्या ?

शरत : ***(हैरत में)*** हूं... लेकिन वो रोबोट वहां नहीं था। ट्रकों का लंबा काफिला वहां से गुजर रहा था। रोड पार करने के लिए हमें कुछ इंतजार करना पड़ा।

ललित : और जब रोड खाली हुई तक हमें रूपक... यानी वो रोबोट कहीं भी नजर नहीं आया। ऐसा लगा, मानो वो हवा में ही कहीं गायब हो गया हो।

(ललित के फोन की घंटी बजती है / ललित फोन पर बात करता है।)

ललित : हेलो... हां नेहा.. ओह... तुम वहां पहुंच भी गई। ठीक है... ठीक है... मैं भी जल्दी से वहां पहुंचता हूं। नहीं.. नहीं.. ऐसी कोई बात नहीं है। मैं रास्ते में ही हूं... हां... हां... जल्दी ही मिलते हैं। ***(ललित फोन रखता है)***

अफरीना **(शरारती अंदाज में) :** ओह... तो ये नेहा है ? प्रोफेसर शुक्ला की बेटी ? तुम्हारी नई गर्लफ्रेंड ! अब पता चला... तुम्हारा तो एक अलग ही प्रोजेक्ट चल रहा है... प्यार का प्रोजेक्ट।

ललित : यूं ही कुछ भी मत बोलो अफरीना। नेहा बच्चों के एक अस्पताल में कुछ पैसे डोनेट करने के लिए जाने वाली है। बस, वो मुझसे भी साथ में चलने के लिए कह रही थी।

अफरीना : वाह ! देखो रमन. तुम्हारा एक साथी तो गया... । (व्यंग्य भरे अंदाज में) खुद चाहे मुसीबत में हो, लेकिन दूसरे की मदद जरूर करेंगे।

रमन : हां.. जाओ ललित जाओ। बस, ये जरा ख्याल रखना कि नेहा को हमारी इस मुसीबत की भनक ना लगे। प्रोफेसर शुक्ला इस यूनिवर्सिटी में बहुत असरदार शख्स हैं। अगर किसी भी तरह से उन तक ये बात पहुंच गई तो फिर हम बहुत बड़ी मुश्किल में फंस जाएंगे।

शरत : ***(हकलाते हुए.. सहमे हुए स्वर में)*** हां... ये मत भूलना कि प्रोफेसर शुक्ला ने ही वो आर्डर निकाला था जिसमें कहा था कि कैंपस का कोई भी स्टूडेंट आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस पर अलग से किसी प्रोजेक्ट पर काम नहीं करेगा और...।

अफरीना : ... और अगर किसी ने भी इस बात को नहीं माना तो उसे तुरंत ही कॉलेज से निकाल दिया जाएगा।

रमन : हां.. हां.. मुझे भी मालूम है। पिछले साल हुए हादसे के बाद ही ये ऑर्डर निकाला गया था। ओ हमारा सीनियर था ना पीयूष... उसने एक अजीबोगरीब किस्म का ड्रोन उड़ाने की कोशिश की थी। वो ड्रोन स्टाफ क्वार्टर्स के वॉटर टैंक में जाकर गिर गया था। बहुत ही खराब एल्गोरिद्म था उसका।

अफरीना : रमन... हम भी कोई बेहतर काम नहीं कर रहे हैं ! दूसरे की कमी देखना आसान है।

ललित : मैं तो अभी चलता हूं दोस्तो। मेरी स्कूटी भी पीछे .. आंगन में खड़ी है..। बाय... जल्दी ही मिलते हैं।

समवेत स्वर : बाय...।

---------- Transition Music / Scene Two ----------

(ललित हाईवे पर स्कूटी चला रहा है और खुद से ही बातें भी करता जा रहा है।)

ललित : काश.. रूपक ज्यादा दूर तक ना गया हो... खुद के लिए जरूरी एनर्जी तो वो चलकर पैदा कर ही सकता है.. लेकिन मसला ये नही हैं। बस मुझे तो ये फिक्र है कि वो अनजानी जगहों पर किस तरह का बर्ताव करेगा। हालांकि उसकी मेमोरी में बेहतरीन शब्द भरे पड़े हैं लेकिन उनका सही इस्तेमाल सीखना अभी बाकी है।

(स्कूटी के पीछे से आती एक छोटी वैन ओवरटेक करने के लिए जोर-जोर से हॉर्न बजाती है / ललित चिढ़ जाता है / वो वैन ड्राइवर पर चिल्लाता है।)

ललित : अबे चुप कर... पूरी सड़क खाली पड़ी है... लेकिन तुझे तो चिल्लाने का शौक है बस... चल निकल...।

(ललित वैन को पास देता है और खुद से बोलना जारी रखता है।)

ललित : इस सबकी जड़ सोफिया ही है... हूं... बुद्धिमान रोबोट ! एकदम बकवास... मीडिया ने इसे हवा दे दी... और फिर हर कोई यही समझने लगा कि अब तो बुद्धिमान मशीनों ने धरती पर अवतार ले लिया है। लोग भी कितने भोले हैं....। सोफिया ने अपने चेहरे-मोहरे और हावभाव से लोगों को प्रभावित क्या किया.... सभी उसके मुरीद हो गये... जबकि उसमें और कुछ भी खास नहीं था... बस... नई बोतल में पुरानी शराब।

(ट्रैफिक का शोर / हॉर्न की आवाजें / ललित स्कूटी चलाता रहता है और बोलते रहता है।)

ललित : लगता है, सामने ही है वो अस्पताल। मेरे ख्याल से .. मुझे ज्यादा देर तो नहीं हुई। हां.. वो बाहर नेहा ही तो खड़ी है। शायद इधर ही देख रही है। **(जोर से चिल्लाता है)** नेहा.. नेहा...।

(ललित अस्पताल के अंदर पहुंचता है और अपनी स्कूटी पार्क करता है।)

नेहा : जल्दी आओ ललित... जल्दी से...। हॉस्पीटल सुपरिटेंडेंट भी जल्दी ही यहां से चले जाएंगे...। चलो जल्दी से।

ललित : हां.. ठीक है..। सीढ़ियों से .. या फिर यहां लिफ्ट भी है ?

नेहा : मेरे ख्याल से उधर.. सीढ़ियों के पास में ही लिफ्ट भी है। आओ...इधर।

ललित : हां.. हां... चलो।

नेहा : रुको जरा... ! वहां सामने काफी भीड़ जमा है... देखो उधर...।

ललित : हां... पता नहीं क्या मामला है ? चलो, पूछते हैं जरा..। ***(पास में खड़ी नर्स से पूछता है)*** सिस्टर, क्या बात है ? ये भीड़भाड़ क्यों है इधर ?

नर्स : अरे गजब हो गया ! हॉस्पीटल सुपरिटेंडेंट साहब रोज इसी वक्त अस्पताल से निकलते हैं। आज जैसे ही वो लिफ्ट के अंदर गये... दरवाजे बंद हुए और लिफ्ट अचानक से अटक गई।

नेहा : तो इसमें क्या बड़ी बात है सिस्टर... ? ऐसा तो कई बार हो जाता है।

ललित : अरे नेहा... उनको बताने दो, बीच में मत टोको। हां.. आप पूरी बात बताइये सिस्टर। आखिर हुआ क्या ?

नर्स : लिफ्ट पिछले आधे घंटे से तीसरी और चौथी मंजिल के बीच में फंसी हुई है।

नेहा : ***(खुद से बुदबुदाते हुए)*** ओह...। ये भी आज ही होना था। मैं बाहर इंतजार कर रही थी वो इधर लिफ्ट में फसें हैं!

नर्स : हमने लिफ्ट की देखरेख करने वाली कंपनी को भी कॉल किया.. लेकिन वहां भी अभी कोई टेक्नीशियन मौजूद नहीं है। कंपनी वाले बता रहे थे कि टेक्नीशियन के आने में कम से कम दो घेंटे लगेंगे।

ललित : अरे...। तब तक तो वो बहुत परेशान हो जाएंगे। लिफ्ट में वो अकेले ही हैं क्या?

नर्स : हां, हॉस्पीटल सुपरिटेंडेंट साहब तो अकेले ही हैं... लेकिन मैं तुम्हें बताती हूं कि दरअसल हुआ क्या?

ललित : मतलब... ? क्या हुआ है ?

नर्स : अठारह-बीस साल का एक स्मार्ट सा लड़का भीड़ के बीच से सामने आया...। वो कुछ ज्यादा उम्र का भी हो सकता है... अजीब सा चेहरा.. सपाट गाल...। करीब दस मिनट पहले की ही बात है। उसने कहा कि वो इसमें अस्पताल की मदद कर सकता है।

ललित : ***(उतावले अंदाज में)*** क्या उसकी गर्दन एकदम सीधी थी ? और वो मेरे बराबर ही लंबा था ?

नर्स : हां.. हां... बिल्कुल आपके ही बराबर लंबा था वो। आप उसे जानते हैं क्या ?

ललित : सिस्टर.. जल्दी से बताओ... अभी कहां है वो... ?

नर्स : ***(घबराहट भरे स्वर में)*** वो कुछ कह रहा था। वो बता रहा था कि लिफ्ट के काउंटरवेट बफर (Counterweight Buffer) में कुछ दिक्कत आ गई है और...।

ललित : ***(तनाव भरे स्वर में)*** और ?

नेहा : लेकिन ललित, तुम उसके बारे में इतना क्यों पूछ रहे हो.. ? वो शायद कोई टेक्नीशियन होगा और उसे इस लिफ्ट की समझ भी होगी। क्या पता वो काम की तलाश में हो और...।

ललित : नेहा, प्लीज़ अभी चुप रहो। ये मेरी जिंदगी का सवाल है। सिस्टर, फिर कहां गया वो ?

नर्स : (हकलाते हुए / अटक-अटककर) उधर ... उधर गया था वो...। उस बिल्डिंग के पीछे से चैनल के अंदर चला गया था।

ललित : ओह... नो... (चिंतित स्वर में) उसे इस सिस्टम के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं है। ये सब-कुछ उस सेमिनार (Seminar) का ही नतीजा है। उसे पूरी तरह से जानकारी भी नहीं है।

नेहा : ये क्या कह रहे हो ललित ? कौन सा सेमिनार ? किस जानकारी की बात कर रहे हो तुम?

ललित : ये सब-कुछ अभी नहीं बता सकता नेहा। फिलहाल, मुझे उसे बाहर लाना होगा...।

(ललित, रूपक रोबोट को बाहर निकालने के इरादे से निकल पड़ता है / तनावभरे हालात को दर्शाने वाला संगीत / ललित लिफ्ट के चैनल में पहुंचता है जहां रूपक कुछ कर रहा है।)

ललित : (सावधानी से / हर शब्द को स्पष्ट बोलता है) हाय रूपक ! मैं हूं... ललित।

रूपक : (रोबोटिक आवाज़ / इंसानी आवाज़ से मिलती-जुलती) आओ ललित।

ललित : तुम यहां क्या करने की कोशिश कर रहे हो ?

रूपक : ये लिफ्ट खराब हो गई है और एक शख्स इस लिफ्ट में फंसा हुआ है। मैं उसकी मदद के लिए ही यहां आया हूं। सच्चा दोस्त वही, जो मुसीबत में जो काम आए। क्यों ? सही कहा ना मैंने ?

ललित : ये तो ठीक है रूपक, लेकिन....।

रूपक : यहां पर है कुछ गड़बड़ी। इस कनेक्शन में। ये काउंटरवेट बफर....।

ललित : हमें इनके बारे में ज्यादा पता नहीं है रूपक। बेहतर तो यही रहेगा कि हम लिफ्ट के टेक्नीशियन के आने का इंतजार करें। नीचे उतर आओ रूपक... प्लीज़।

रूपक : अभी नीचे लोग बात कर रहे थे कि अस्पताल के सीएमएस दिल के मरीज हैं। अगर वो ज्यादा वक्त तक लिफ्ट के अंदर फंसे रह गये तो वो बेहोश भी हो सकते हैं। इसलिए हमें इस दिक्कत को दूर करना ही होगा।

ललित : लेकिन क्या तुम्हें पता चल गया है कि लिफ्ट के सिस्टम में गड़बड़ी कहां पर है ?

रूपक : हां...। बस एक छोटी की मैकेनिकल गड़बड़ी है। बस... दस मिनट में सही हो जाएगी।

ललित : रूपक, तुम्हारे पास कोई टूलबॉक्स भी नहीं है..। ऐसे में तुम इसे भला ठीक कैसे कर दोगे ?

रूपक : कंपनी ने यहां एक टूलबॉक्स रखा है... छोटा सा टूल बॉक्स...। मुझे अपने कैमरे से वो साफ-साफ नजर आ रहा है। मैं ... उसे... लेकिन...

ललित : ***(खुद से / धीमे से बुदबुदाते हुए)*** पता नहीं क्या बड़बड़ा रहा है वो...।

रूपक : बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम। अब मैं इसे इस्तेमाल करने वाला हूं।

ललित : रूपक, समझने की कोशिश करो। तुमने लिफ्ट संबंधी उस सेमिनार के दूसरे सेशन में हिस्सा नहीं लिया था। तुम्हारी जानकारी अधूरी है। इसलिये प्लीज नीचे उतर आओ रूपक...। हम टेक्नीशियन का इंतजार करे लेंगे।

रूपक : सच्चा दोस्त वही, जो मुसीबत में काम आए। हमें कोशिश जरूर करनी चाहिए।

ललित : लेकिन तुम्हें यह कैसे मालूम कि करना क्या है ? उस सेमिनार का पहला सेशन तो सिर्फ मामूली जानकारियों पर ही था। दूसरे तमाम टेक्निकल मसलों पर तो अगले दिन बातचीत हुई थी... और तुम उसमें शामिल नहीं थे।

रूपक : मैं जेनी से मिला था। ***(लिफ्ट को ठीक करने में मशगूल हो जाता है)*** इस लिफ्ट की देखरेख भी सही तरीके से नहीं हुई है। इन गरारियों दो देखो जरा... लुब्रिकेशन भी नहीं हुआ है।

ललित : जेनी से ? मतलब जो एक्सपर्ट उस दिन सेमिनार में बोल रही थीं ? तुमने उनसे अलग से मिलकर चीजें सीखीं ? मुझे तो यकीन नहीं हो रहा।

रूपक : सीधे दिमाग से जोड़ दिए दिमाग के तार... ब्रेन-टु-ब्रेन ट्रांसमिशन...। मैंने सारी जानकारी अपनी मेमोरी में कॉपी कर ली। ***(लिफ्ट को ठीक करने में मशगूल हो जाता है)*** इस लिफ्ट की देखरेख करने वाले ठेकेदार को तो सजा मिलनी चाहिए। बहुत ही बेकार मेंटेनेंस है.... बहुत ही घटिया।

ललित : लेकिन ये बताओ रूपक, जेनी ने अपने दिमाग का डेटा तुम्हें भला कैसे दे दिया ?

रूपक : वो सॉफ्टवेयर तो रमन ने बनाया था। कभी-कभार उसमें दिक्कत आ जाती है लेकिन उस दिन उस सॉफ्टवेयर ने बिल्कुल सही तरीके से काम किया। (लिफ्ट के पुर्जों को ठीक करने की आवाज़) मेरा काम भी करीब-करीब पूरा ही हो गया है।

ललित : पूरा हो गया ? मतलब तुमने इस लिफ्ट को ठीक कर लिया ?

रूपक : हां बिल्कुल...। एकदम ठीक हो गई और अब कुछ ही देर में चल भी पड़ेगी। तभी तो मैंने कहा था... वही सच्चा दोस्त, जो मुसीबत में काम आए।

ललित : हे भगवान...। तब तो हमें जल्दी ही यहां से बाहर निकलना होगा... नहीं तो हम दोनों ही इस लिफ्ट से कुचल जाएंगे...। जल्दी करो रूपक.. जल्दी...।

रूपक : सच्चा दोस्त वही, जो मुसीबत...

ललित : अभी फालतू बकबक मत करो रूपक... जल्दी से बाहर निकलो.. जल्दी से।

रूपक : अरे... अरे... इतनी भी बेसब्री मत दिखाओ दोस्त...।

ललित : भाड़ में जाए तुम्हारी दोस्ती...। लगता है कि तुम्हें खींचकर ही बाहर निकालना पड़ेगा। ऐसे नहीं मानोगे तुम...। ***(लोहे को घसीटकर बाहर खींचने की आवाज़ / लिफ्ट भी चलना शुरू कर देती है।)***

रूपक : वाह.. बाहर की हवा में कितनी ताजगी है।

ललित : अच्छा ... तो तुम प्रदूषण मापने वाले सेंसर से हवा की ताजगी का एहसास कर रहे हो। लेकिन मुझे तो अभी सचमुच में ताजा हवा की जरूरत पड़ रही है। जरा रूको रूपक। अगर हम उन लोगों के सामने पहुंच गये तो फिर भीड़ तुम्हें घेर लेगी। तुम्हारा तो हीरो की तरह स्वागत होगा... लेकिन मैं मुसीबत में पड़ जाऊंगा।

रूपक : लेकिन हमने तो टूलबॉक्स ऊपर ही छोड़ दिया...। चीजों की ऐसी बर्बादी तो पैसों की ही बर्बादी है ना ?

ललित : रूपक, मुझे ये बेमतलब की बातें और नहीं सुननी। लेकिन तुम्हें इस जगह से सही सलामत बाहर निकालने की कोई तरकीब तो खोजनी ही होगी। क्या किया जाए अभी...। वैसे भी तुम बहुत थक गए हो और तुम्हें आराम की भी जरूरत है। चलो आओ... कुछ ना कुछ रास्ता निकालना ही होगा।

(रूपक और ललित लिफ्ट के सामने की तरफ बढ़ते हैं जहां पर भीड़ जमा है)

भीड़ का शोर : देखो.. देखो... वो आ गए...वाह... बहुत बहुत शुक्रिया तुम्हारा... शानदार काम कर दिखाया तुमने..।

(अस्पताल के सुपरिटेंडेंट... रूपक से हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ते हैं)

सुपरिटेंडेंट : मैं हूं डॉक्टर चटर्जी...। इस अस्पताल का सुपरिटेंडेंट। तुमने तो आज मेरी जान बचा दी। मैं पूरी जिंदगी तुम्हारा ये एहसान नहीं भूलूंगा।

रूपक : सच्चा दोस्त वही जो...

ललित : सर.. सर... मेरा दोस्त अभी बहुत थका हुआ है। अभी इसे कुछ आराम करने दीजिए...।

सुपरिटेंडेंट : हां.. हां क्यों नहीं। ये तो थक ही गये होंगे और आराम भी जरूरी है। यहीं पर पास में हमारा अच्छा सा रेस्टरूम है। आप दोनों वहां आराम कर सकते हैं। मैं कुछ चाय-पानी भिजवाता हूं।

ललित : चाय ! हां.. नहीं.. नहीं..। दरअसल मेरे दोस्त को पेट की कुछ दिक्कत है। उन्हें गैस्ट्रिक अल्सर है और डॉक्टर ने चाय वगैरह के लिए सख्त मना किया हुआ है।

नर्स : इतना तंदरुस्त दिखने वाले इंसान को पेट का अल्सर ! यकीन नहीं होता। ठीक है, थौड़ा फलों का जूस भिजवा देते हैं।

ललित : फलों का जूस ? नहीं.. नहीं.. वो भी नुकसान ही करेगा। फिलहाल आप हमें निकलने की इजाजत दीजिए बस...।

सुपरिटेंडेंट : आप जिद कर रहे हैं तो ठीक है। ***(हल्की हंसी के साथ)*** हम तो सोच रहे थे कि आपके दोस्त ने जो मेहनत की है और अपना वक्त दिया है, हम उसकी कुछ भरपाई कर दें।

ललित : शुक्रिया सर... आपको हमारा इतना ख्याल है...। लेकिन फिलहाल हम चलते हैं। ***(रूपक से मुखातिब होते हुए)*** चलो दोस्त, मेरी स्कूटी पर बैठो। जल्दी से...।

सुपरिटेंडेंट : आप नहीं मान रहे हैं तो ठीक है...। फिर कभी मुलाकात होगी।

रूपक : ओके.. बाय सर... गुडनाइट।

सुपरिटेंडेंट : गुडनाइट दोस्त... फिर मिलेंगे।

(ललित अपनी स्कूटी स्टार्ट करके निकलता है / भीड़ का शोर पीछे छूटता जाता है।)

---------- Transition Music / Scene Three ----------

(रात के नौ बजे का वक्त है / जल्दबाजी में एक मीटिंग बुलाई गई है / मीटिंग में अफरीना को छोड़कर सभी लोग मौजूद हैं।)

रमन : अभी अफरीना तो नहीं आ पाएगी। लेडीज हॉस्टल के गेट शाम आठ बजे ही बंद हो जाते हैं। हमें उसके बगैर ही ये काम करना पड़ेगा।

शरत : ऐसा करते हैं... उसे फोन करो और फोन को स्पीकर मोड पर रखो।

ललित : हां, ये अच्छा आइडिया है। उसे कॉल लगाओ रमन।

रमन : मुझसे ही क्यों कह रहे हो। तुम अपने फोन से ही बात कर लो।

ललित : प्लीज रमन, अभी मुझसे मेरा फोन ऑन करने को मत कहो। नेहा लगातार मुझे कॉल कर रही है। वो लगातार मुझसे पूछताछ कर रही है। मैं उसे सबकुछ बता भी तो नहीं सकता। कुछ देर पहले जब उसका फोन आया था तो मैंने कह दिया था कि मेरे फोन में कुछ दिक्कत है और वो अचानक स्विच ऑफ हो जा रहा है।

शरत : ***(हल्की हंसी के साथ)*** वाह... ये तुमने अच्छा बहाना बनाया ललित।

ललित : ज्यादा दांत मत दिखाओ और अफरीना को कॉल करो। वैसे भी हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है। हमें समय रहते अपने हॉस्टल में भी लौटना है।

(शरत अफरीना को कॉल लगाता है / फोन की घंटी बज रही है / फोन को स्पीकर मोड पर रखता है।)

शरत : हेलो अफरीना... मैं बोल रहा हूं शरत..।

अफरीना (फोन पर) : हां शरत.. बताओ... क्या स्थिति है अभी ? तुमने रूपक को डिएक्टिवेट कर दिया या नहीं ?

ललित : हां, हमने उसे डिएक्टिवेट कर दिया है। उसे फोल्ड करके बॉक्स में भी रख दिया है। उसे लेकर फिक्र की कोई बात नहीं।

रमन : लेकिन रूपक हॉस्पीटल कैसे पहुंचा ? ललित. इसका कुछ सुराग लगा क्या ?

शरत : मेरा तो अंदाजा है कि वो किसी ट्रक पर चढ़ गया होगा और वहां तक पहुंच गया होगा।

रमन : लेकिन ट्रक तो लगातार चल रहे थे। क्या रूपक इतनी स्पीड से दौड़ सकता है कि वो चलते हुए ट्रक पर चढ़ जाए ?

शरत : हां.. हां.. ऐसा हो भी सकता है। क्योंकि रूपक को इस तरीके से प्रोग्राम किया गया है कि वो हालात के मुताबिक खुद की नई क्षमताएं हासिल कर सके।

अफरीना (फोन पर) : इस पर जरा गहराई से सोचो शरत। आखिर वो क्या बात रही होगी कि उस रोबोट ने किसी हीरो की तरह स्टंट कर दिखाया। हमें इसका पता लगाना ही होगा।

ललित : लेकिन हमारी प्रोग्रामिंग में एक बड़ी कसर तो रह ही गई। मुझे उसकी ही फिक्र है।

रूपक : कौन सी कसर ? हमें उसपर ध्यान देना ही होगा।

ललित : देखो, जब रूपक लिफ्ट को ठीक कर चुका था, तब लिफ्ट तेजी से नीचे की ओर आने वाली थी। लेकिन रूपक इस खतरे से अनजान था कि वो लिफ्ट से कुचल भी सकता है। इसका मतलब ये हुआ कि उसकी प्रोग्रामिंग उसे खतरे का एहसास नहीं करा पा रही थी।

अफरीना (फोन पर) : बड़ी गजब की बात पकड़ी ललित तुमने...। डर का एहसास और खतरे को समझना तो इंसान की पहली जरूरत है।

शरत : लेकिन रूपक कोई इंसान तो है नहीं...।

अफरीना : कैसी बात कर रहे हो शरत ? तुम ये भूल गये क्या कि हम लोग जनरल आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस के ऊपर एक्सपेरीमेंट कर रहे हैं। हमें इस बात का ख्याल तो रखना ही होगा कि हमारी मशीन की इंटेलीजेंस इंसानी दिमाग से मिलती-जुलती तो हो ही... खासकर किसी खतरे के वक्त।

रमन : अफरीना सही कर रही है। चाहे कोई जीव-जंतु हो या फिर कोई इंटेलीजेंट मशीन.... उनका अस्तित्व तब तक नहीं बचेगा, जब तक कि उनमें खतरा भांपने की क्षमता ना हो।

ललित : तो फिर अब क्या कहते हो तुम ? क्या हमें इसे फिर से प्रोग्राम करना होगा ? अगर हम रिप्रोग्रामिंग करते हैं तो फिर जो कुछ भी रूपक ने अब तक सीखा है, वो सब बेकार चला जाएगा।

रमन : हां.. ये बात तो है..। हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते। हमें इस पर सोचना पड़ेगा।

शरत : जरा उधर देखो रमन..।

रमन : कहां ? क्या है ?

शरत : अपने दाईं ओर देखो। उधर.. उस कोने में...। एक छाया सी दिख रही है ?

ललित : छाया.... हां... छाया तो दिख रही है लेकिन मुझे कोई शख्स वहां नजर नहीं आ रहा है।

रमन : (***चेतावनी भरे अंदाज में***) ज्यादा ध्यान से देखो ललित... वो रूपक है। वो बॉक्स से बाहर निकल आया है...**(डरी हुई आवाज़)** ऐसा कैसे हो गया ?

अफरीना : क्या हुआ... क्या हो गया... क्या हो गया रूपक को ?

रमन : रूपक फिर से एक्टिवेट हो गया... वो भी अपनेआप ! वो बड़ी तेजी से नई-नई चीजें सीखता जा रहा है। अब वो कैंपस से बाहर की ओर जा रहा है...।

ललित : भागो शरत...। जल्दी करो.... हमें उसे पकड़ना होगा...।

शरत : **(भयभीत आवाज़)** रमन, कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी दिन वो हमारी बातें भी ना सुने ? क्या होगा, अगर उसने बगावत कर ली तो ?

रमन : ये तो मुझे भी मालूम नहीं है शरत... लेकिन फिलहाल हमें उसे पकड़ना ही होगा... चलो ललित... भागो... तेज... और तेज...।

(तीनों लोग रूपक को पकड़ने के लिए भागते हैं / तेज भागने की कदमों की आवाज़ / संगीत /)

----------Closing Music----------